शासकीय स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय

दतिया (म.प्र.)

(उत्कृष्ट संस्थान उच्चशिक्षा)

(जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की स्वशासी संस्था)

तमसो मां ज्योतिर्गमय

स्नातक ______ स्नातकोत्तर / विषय M.Sc IV sem (zoology)

परीक्षा का नाम M.Sc IV Sem (zoology) सत्र 2020-2021

विषय/प्रश्न-पत्र (१) Animal behaviour (२) Biology of Parasites (३) Fisheries & Pisciculture (४) Aquaculture

(५)......................

प्रवेश-पत्र

(परीक्षा के समय प्रवेश-पत्र लाना अनिवार्य है)

नामांकन/पंजीयन क्रमांक J.I.S.BSC.M2050127 अनुक्रमांक 1931018

श्री/कुमारी/श्रीमती [illegible] आत्मज/आत्मजा [illegible]

जो इस महाविद्यालय का छात्र/छात्रा है, को परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए इस केन्द्र पर प्रवेश दिया जाता है।

परीक्षा नियंत्रक

कृ.प.द.

GOVT.AUTONOMOUS P.G COLLAGE DATIA

MILK DAIRY PROJECT

M.SC 4th SEM {ZOOLOGY}

YEAR -2020-21

SUBMITTED TO

DR.ABHAY RAHUL

SUBMIT BY

SHRADDHA SHARMA

M.sc 4th SEM STUDENT

ZOOLOGY

ROLL NO.-1931018

MILK – DAIRY – PROJECT

GOVT. AUTONOMOUS P.G COLLEGE DATIA.

STUDENT-NAME → Shraddha Sharma.

ROLL-NO. → 1931018

CLASS → M.Sc IV sem (Zoology)

80/100

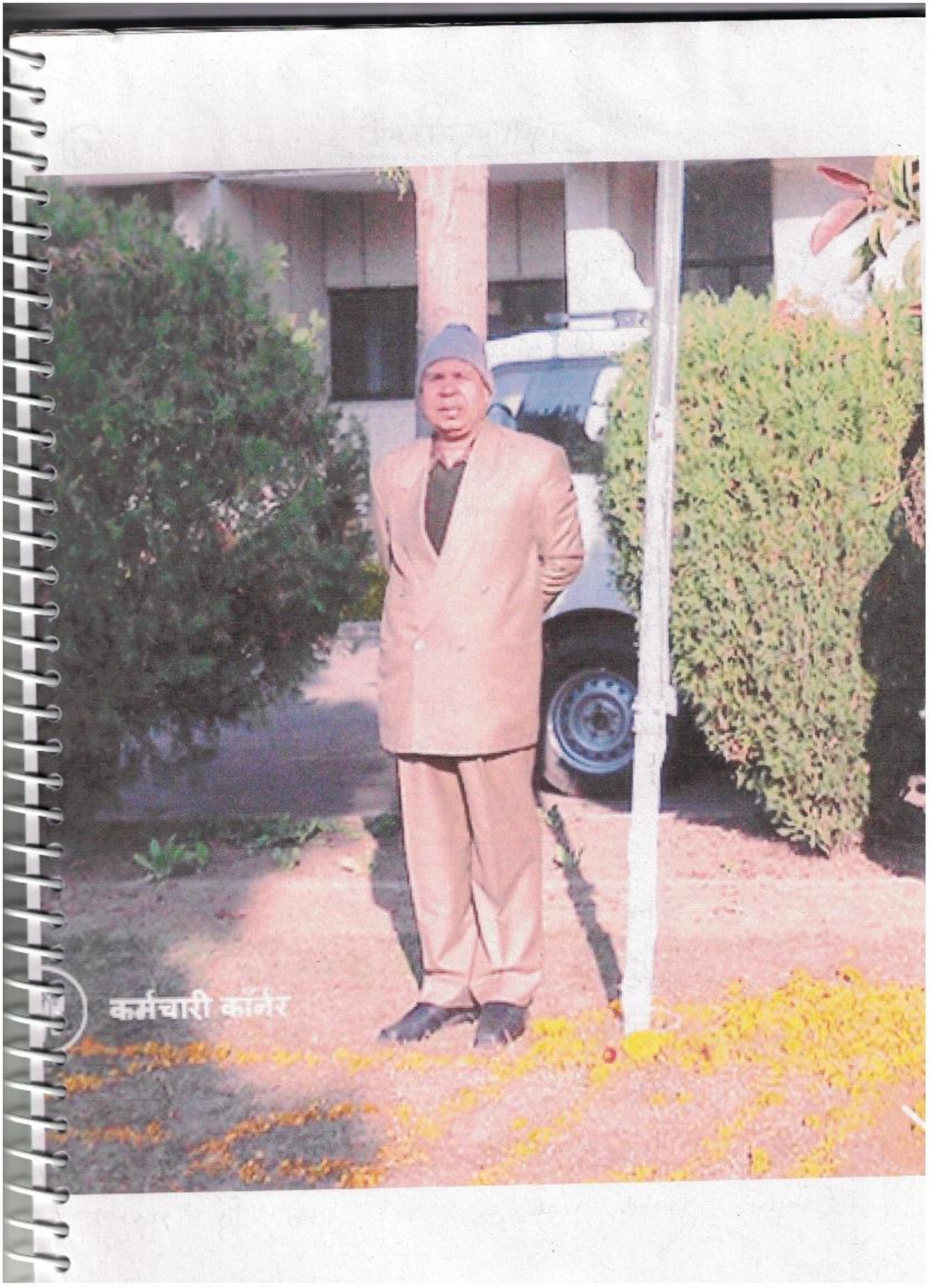
कर्मचारी कॉर्नर

(13)

"डेयरी फार्मिंग"

1. प्रस्तावना → लघु/सीमांत कृषकों और कृषि मजदूरों के लिये डेयरी कार्य पूरक आमदनी का एक महत्वपूर्ण साधन है इस गतिविधि में दूध के अलावा पशुओं से खाद भी मिलती है जो कि मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादन में सुधार के लिये जैविक सामग्री का बहुत अच्छा स्रोत है। पशुओं के गोबर से गैस मिलती है जिसका उपयोग घरेलू कार्यों के लिए ईंधन और खेतों से पानी निकालने के लिए इंजन चलाने में भी होता है। अतिरिक्त चारे और कृषि के सह-उत्पाद का लाभप्रद उपयोग पशुओं को खिलाने में किया जाता है कृषि परिचालनों और परिवहन के लिए खींचने की लगभग संपूर्ण शक्ति बैलों से मिलती है चूंकि कृषि कार्य मुख्यतः मौसमी होता है इसलिए डेयरी कार्य के माध्यम से बहुत से लोगों को पूरे वर्ष रोजगार मिलने की संभावना है। इस प्रकार डेयरी से पूरे वर्ष रोजगार की मिलता है। डेयरी कार्यक्रम के प्रमुख लाभार्थी लघु/सीमांत कृषक और कृषि मजदूर हैं। डेयरी शुरू करने के लिये कृषकों को लोन भी सरकार की तरफ से उपलब्ध कराया जाता है।

2 डेयरी फार्मिंग की संभावनायें और इसका राष्ट्रीय महत्व :-

विश्व में सर्वाधिक पशु संख्या भारत में है विश्व की भैंसों की कुल संख्या का 57.3 प्रतिशत और कुल पशु संख्या का 14.7 प्रतिशत यहाँ है। 2011-12 में 3,05 484 करोड़ का दुग्ध उत्पादन हुआ। ग्यारवीं पंचवर्षीय योजना में 2011-12 देश का कुल दुग्ध उत्पादन 127.9 मिलियन टन प्रति वर्ष था और 2020 तक इसकी मांग बढ़कर 180 मिलियन टन होने की संभावना है इस मांगको पूरा करने के लिए दुग्ध उत्पादन की वृद्धि दर वर्तमान के 2.5 से बढ़कर 5% होनी चाहिये 2011-12 में दुग्ध उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर लगभग 5% रही इस प्रकार इस लाभदायक व्यवसाय पशुपालन के माध्यम से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की अपार गुंजाइश संभाव्यता है।

3. डेयरी फार्मिंग के लिए बैंकों से उपलब्ध वित्तीय सहायता

बड़े परियोजना वाली डेरी योजनाओं के लिए वित्तीय परियोजना रिपोर्ट तैयार करनी होती है। वित्तपोषण की मदों में पूंजी आस्ति मदें जैसे दुधारू पशुओं की खरीद पशुशालाओं का निर्माण यंत्रों आदि की खरीद शामिल है। एक दो माह की प्रारंभिक अवधि

के लिए पशुओं को चारा खिलाने की लागत को पूंजीकृत किया जाता है और सावधि ऋण के रूप में दी जाती है। भूमि विकास कुआं खोदने डीजल इंजन / पंपसेट को चालू करने बिजली कनेक्शनों नौकरी के लिए आवश्यक क्वार्टरों गोदामों परिवहन वाहनों, दुग्ध प्रसंस्करण सुविधाओं आदि को ऋण के लिए स्वीकार किया जाता है। उच्च लागत वाली परियोजनाओं के लिए ऋण कर्ता नाबार्ड कन्सल्टेन्सी सर्विसेज जिनके व्यापक परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का वृहद अनुभव है कि सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं।

4. वैंक ऋण के लिए परियोजना बनाना →

लाभार्थी द्वारा म.प्र. राज्य सरकार के पशुपालन विभाग। जिला ग्रामीण विकास अभिकरण डेयरी सहकारी समिति / यूनियन / फेडरेशन / वाणिज्यिक डेरी किसानों के स्थानीय तकनीकी व्यक्तियों से परामर्श करने के बाद परियोजना बनाई जा सकती है यदि संभव हो तो लाभार्थी को नजदीकी प्रगतिशील डेयरी फार्मों और सरकारी / सैन्य / कृषि विश्वविद्यालयों के डेयरी फार्मों का दौरा करना चाहिए और डेयरी फार्मिंग की लाभप्रदता के बारे में विचारविमर्श करना चाहिए।

अच्छा व्यावहारिक प्रशिक्षण और डेयरी फार्मिंग की लाभप्रदता के बारे में विचार-विमर्श करना चाहिये। अच्छा व्यवहारिक प्रशिक्षण और डेरी फार्मिंग का अनुभव अत्यधिक वांछनीय है। यदि गांव में डेरी सहकारी समितियां है तो वे विशेष रूप से तरल दुग्ध की बिक्री के लिए सभी संभव सुविधायें उपलब्ध करायेंगी। डेयरी फार्म की इस प्रकार की समिति पशु सहायता केन्द्र कृत्रिम गर्भधान केन्द्र से नजदीकी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

तकनीकि →

1. भूमि विकास
2. प्रस्तावित क्षमता / दुधारु पशुओं की संख्या
3. सिविल निर्माण
4. उपकरण और संयंत्र एवं मशीनरी
5. पशुशाला का प्रकार
6. पशु की खरीद, प्रजाति
7. उत्पादन मानदण्ड
8. प्रजनन सुविधायें
9. पशु चिकित्सा सहायता स्रोत।

5. परियोजना का मूल्यांकन डेरी →

इस प्रकार तैयार की गई योजना बैंक की नजदीकी शाखा में जमा की जानी चाहिए। बैंक का अधिकारी योजना तैयार करने अथवा निर्धारित आवेदन फार्म भरने में मदद कर सकता है। इसके बाद तकनीकी व्यवहार्यता और आर्थिक साध्यता के लिए बैंक द्वारा योजना की जाँच की जाएगी।

6. दूध उत्पादन → डेयरी उत्पाद दूध के दीर्घकालिक उत्पादन के लिए कृषि का एक वर्ग है। जिसे संसाधित किया जाता है या तो खेत पर या डेयरी संयंत्र में जिसमें से किसी को डेयरी कहा जा सकता है। डेयरी उत्पाद की बिक्री के लिए।

7. डेयरी फार्मिंग का इतिहास →

जबकि मवेशियों को 12000 साल पहले एक खाद्य स्रोत के रूप में और बोझ के जानवरों के रूप में पालतू बनाया गया था डेयरी उत्पादन के लिए पालतू गायों का उपयोग करने का सबसे पहला सबूत सातवीं सहस्राब्दी = पिछली सदी में या अकेले डेयरी में विशेषज्ञता वाले खेत फार्म सामने आए है।

1800 के दशक में वॉन थुनेन ने तर्क दिया कि एक शहर के आसपास लगभग 100 मील का दायरा था जहाँ इस तरह के ताजे दूध की आपूर्ति आर्थिक रूप से व्यवहार्य थी।

Goverment milk Factory Daboh (Bhind) (M.P)

"दुग्ध शीत केन्द्र दबोह" यह ग्वालियर सहकारी दुग्ध

Introduction :- संघ मर्यादित, ग्वालियर की एक Milk Dairy branch है। जो म.प्र. के भिण्ड जिले के दबोह कस्बे में स्थित है। दुग्ध शीत केन्द्र दबोह की स्थापना 1985 में हुई थी।

स्थान → यह दुग्ध शीत केन्द्र भांडेर - भिण्ड मार्ग पर स्थित है।

खुलने एवं बंद होने का समय → दबोह में स्थित दुग्ध शीत केन्द्र सुबह 8 बजे से शाम 7 बजे तक खुला रहता है।

दुग्ध एकत्रित करने वाला स्थान → दबोह शीत केन्द्र -

दुग्ध उत्पादन करने वाले गाँव व कस्बे :- अरुसनी, अरुदेवा, पावनी, फिरोली, आलमपुर आदि

दुग्ध सप्लाई करने वाला स्थान :- → ग्वालियर दुग्ध संघ में एवं आमोर जिले में सप्लाई किया जाता है।

कुल 17,000 हजार लीटर दूध को दबोह शीत केन्द्र से Gwalior. Sahakari Dugdh Sangh Maryadit में भेजा जाता आदि को सप्लाई किया जाता है।

वित्तीय →

क. वित्तीय व्यवहार्यता (आंतरिक प्रतिफल दर लाभ लागत अनुपात निवल वर्तमान मालियत)

ख. उधारकर्ता की वित्तीय स्थिति (लाभप्रदता अनुपात, ऋण इक्विटी अनुपात, यथा आयकर और अन्य का देयताओं का भुगतान अद्यतन किया गया है!

ग. ऋण की शर्तें (ब्याज दर, अनुग्रह अवधि प्रतिभूति का प्रकार!

प्रबंधकीय → उधारकर्ता का प्रोफाइल

क. व्यक्ति / साझेदार / कम्पनी / कार्पोरेशन / सहकारी समि अन्य

ख - प्रस्तावित व्यवसाय के प्रबंध की क्षमता

ग. - प्रस्तावित गतिविधि अथवा अन्य का अनुभव

घ - वित्तीय मजबूती

ङ तकनीकी और अन्य विशेष योग्ताएँ

च. तकनीकी / प्रबंधकीय स्टाफ और उसकी पर्याप्तता

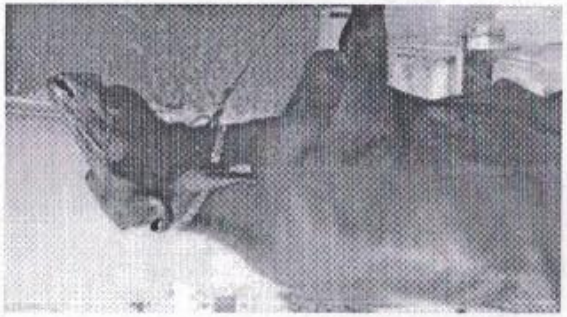

जिसमे भैंस के दुध की मात्रा 13,500
गाय का दुध 3,500
होता है।

दबोह शीत केन्द्र में कुल Parmanent 5 कर्मचारी कार्य करते
Temporary 7 कर्मचारी, मजदूर
कार्य करते है।

दबोह शीत केन्द्र का Manager, MR. विजयकुमार अग्रवाल जी

दबोह शीत केन्द्र में दुध को इकट्ठा करके फिर ठण्डा किया जाता है,

दुध को एकत्रित करने का कार्य →

दुध को कर्मचारी एकत्रित करने का कार्य करते है।
सभी कर्मचारी दुध को गाँवो व नगरों से एकत्रित करते है।
एवं उसको शीत करके सप्लाई कर दिया जाता है।

दबोह शीत केन्द्र के अस्तित्व में रहने से आस-पास के लोगों
को दुध की आपूर्ति होती है एवं रोजगार की भी
प्राप्ति होती है। दुग्ध डेयरी में अत्यधिक कर्मचारियों
की आवश्यकता होती है जिससे सभी कर्मचारियों
को रोजगार की प्राप्ति हुई तथा इससे
बेरोजगारी की दर में कमी आयेगी एवं सभी लोगों
को दुध से बने product की भी आपूर्ति होगी।

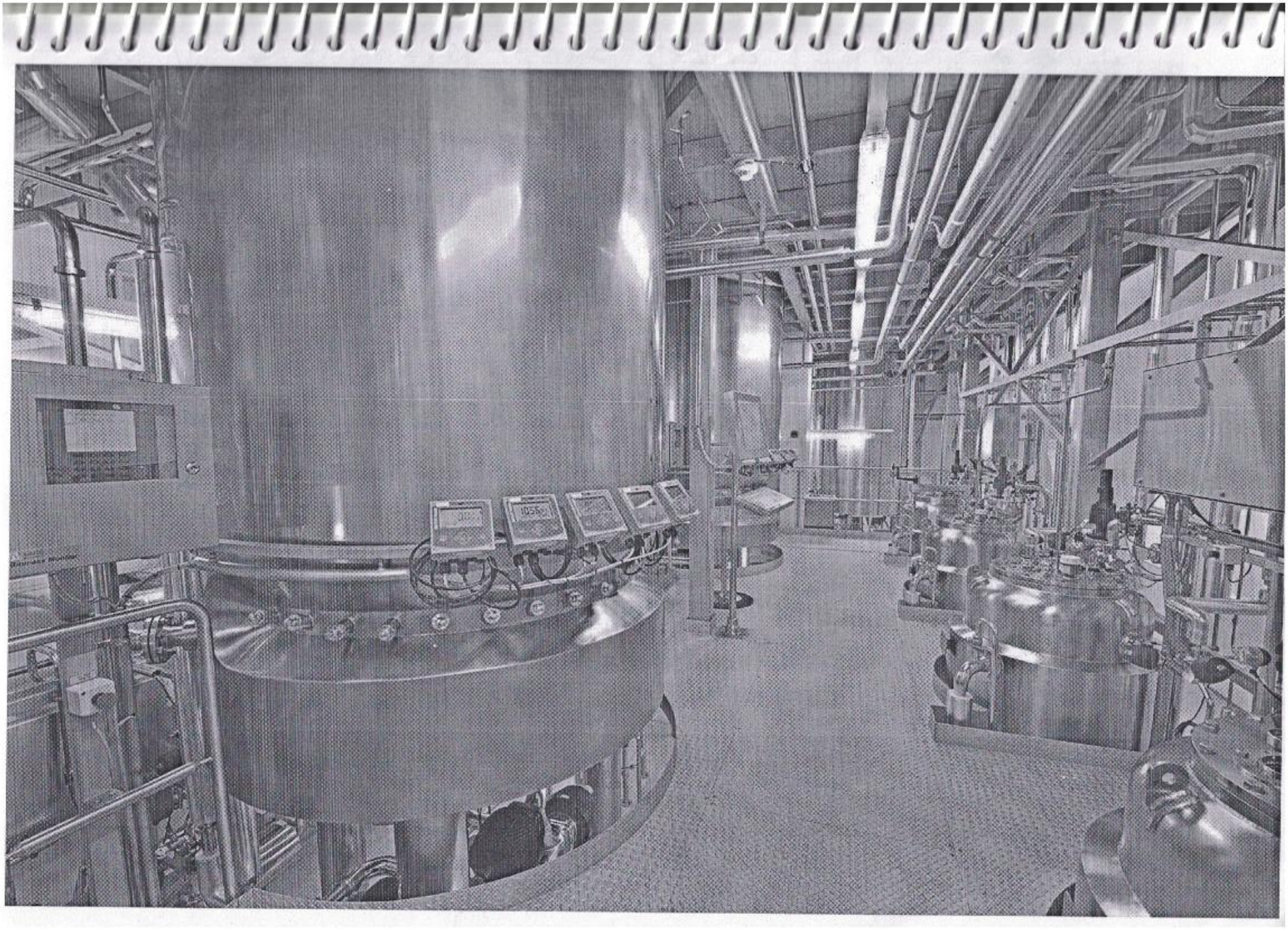

"दूध को शीतलन के लिए उपयोग किये जाने वाले तरीके"
Methods used for Cooling of milk.

सामान्यतः दूध को शीतलन के लिए उपयोग किए जाने वाले निं० लि० तरीके है जिसमे -

(i) देशी विधि → देशी विधि मे दूध को ठण्डा करने मे पानी या बर्फ का उपयोग करते है ग्रामीण क्षेत्रों मे दूध को ठण्डा करने की तीन उपविधियाँ अपनायी जाती है।

(ii) भीगे टाट के बोरे का उपयोग → थोडी मात्रा मे दूध को डिब्बों मे भर कर उनके चारों ओर पानी से भीगा कपडा या टाट का बोरा लपेट देते है। कपडे मे पानी वाष्पीकरण के लिए दूध के बर्तन से गुप्त ऊष्मा शोषित करके दूध को ठण्डा करता है। कपडे के सूखने पर उसे पुनः भिगो लिया जाता है। इस विधि मे दूध का तापमान गर्मी की ऋतु मे शीघ्रता से नहीं बढता है।

(iii) डिब्बों को पानी मे डुबो कर →
ग्रामीण दुग्ध संग्रह केन्द्रों पर दूध को ठण्डा रखने के लिए एक टैंक मे पानी व बर्फ भर के उसमें दूध से भरे डिब्बों को रख दिया जाता है। इससे दूध ठण्डा बना रहता है। यह विधि ग्रामीण Assembling centers पर भी अपनाई जाती है।

डिब्बों में दूध के प्रक्षोभन की व्यवस्था भी रखी जाती है

(iii) विल्क टैंक शीतक (Bulk Tank Cooler)

दूध के बड़े टैंकों या साइलों में दूध को ठण्डा करने के लिए यांत्रिक प्रशीतन प्रणाली का उपयोग किया जाता है इसमें प्रशीतन पदार्थ ठण्डा पानी/प्रशीतित ब्राइन टैंक के दूध में से coil Type Tubes के द्वारा प्रवाहित किया जाता है दूध समान रूप से ठंडा हो अतः प्रक्षोभन की व्यवस्था भी की जाती है।

दूध संरक्षण के निम्नलिखित तरीके हैं :-

ठंडा तापमान मुख्य विधि है जिससे द्वारा दूध की ताजगी को बढ़ाया गया है। जब पवन चक्कियों और अच्छी तरह से पंपों का अविष्कार किया गया था तो उनका पहला उपयोग खेत पर किया गया है। इसके अलावा जानवरों के लिए पानी उपलब्ध करने, दूध को ठंडा करने के लिए इसके भंडारण जीवन का विस्तार करने के लिए जब तक कि इसे शहर के बाजार तक नहीं पहुंचाया जा

स्वाभाविक रूप से ठंडे भूमिगत पानी को लगातार एक ठंडा हव या वात में पंप किया जाएगा लंबा समय तक ताजे प्राप्त दूध से भरे दस गैलन धातु के कंटेनर जो स्वाभाविक रूप से गर्म होते हैं को इस शीतल स्नान में रखा गया था। दूध ठंडा करने की यह विधि बिजली और प्रशीतन के आने से पहले लोकप्रिय थी।

तत्पश्चात निचले आधे भाग में प्रशीतक या ऊष्मक माध्यम प्रवाहित होता है।

इनमें दुग्ध एक बहुत महीन परत के रूप में प्लेट के सम्पर्क में आकर शीघ्रता पूर्वक ठण्डा या गर्म हो जाता है। दुग्ध तथा शीतक का प्रवाह एक दूसरे की विपरीत दिशा में रहता है

(v) डूबने वाले शीतक (Immersion Cooler)

प्रशीतक की इकाई विस्तार इकाई की रचना इस प्रकार की होती है कि उसे दुग्ध के भरे डिब्बों में दुग्ध को डुबो दिया जाता है। दुग्ध को समान रूप से ठण्डा करने की दृष्टि से विद्युत चालक प्रक्षोभकों द्वारा हिलाया जाता है। ये प्रक्षोभक भी विस्तार इकाई से जुड़े रहते हैं।

(vi) कैबिनेट शीतक (cabinet cooler)

दुग्ध को ठंडा करने के लिए अधिक मात्रा होने पर उसे एक साथ ठंडा करने के लिए दुग्ध की मात्रा के आधार पर आवश्यकतानुसार सतही शीतकों को एक साथ जोड़ कर कार्य लिया जाता है। इन संयुक्त सतही शीतकों को ही कैबिनेट शीतक कहते है। ये कम स्थान तथा कम समय में अधिक मात्रा में दुग्ध को ठण्डा कर सकते हैं।

रोटर फ्रीज प्रशीतलन इकाई की विस्तार इकाई, पानी या प्रशीतित ब्राइन के circulation द्वारा दुग्ध को ठंडा किया जाता है।

वैज्ञानिक विधियाँ (Scientific methods)

वैज्ञानिक विधि से दूध को ठण्डा करने के लिए यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है जिन्हें शीतक कहते है! इन शीतकों का आकार एवं प्रकार दूध को ठण्डा की जाने वाली मात्रा पर निर्भर करता है।

शीतकों के मुख्य प्रकार निम्नलि० है →

केन डुबोना → (Can immension on Inchurn method) —

दूध से भरे डिब्बों को ठण्डे पानी से भरे टैंक में रखा जाता है! जिससे पानी को गतिशील बनाये रखने के लिए एक विद्युत चलित प्रक्षोभक लगा रहता है। टैंक में पानी दूध के डिब्बों में प्रवेश न कर पाये।

(2) सतही शीतल —

सतही शीतकों में दो भागों में बँटी हुई Stainless steel की एक-2 ट्यूब में ऊपर के आधे भाग में ठण्डा पानी तथा नीचे के आधे भाग में प्रशीतक बहता है। ठण्डा पानी तथा प्रशीतक अपने स्थान में नीचे से प्रवेश करके ऊपर को बहते हुए ऊपरी भाग से निकलती है।

प्रशीतक के रूप में Brine, NH_3, Freon. आदि का प्रयोग किया जाता है। इन गर्म दूध को पहले ऊपरी आधे भाग में ठण्डे पानी के सम्पर्क द्वारा ठण्डा होता है।

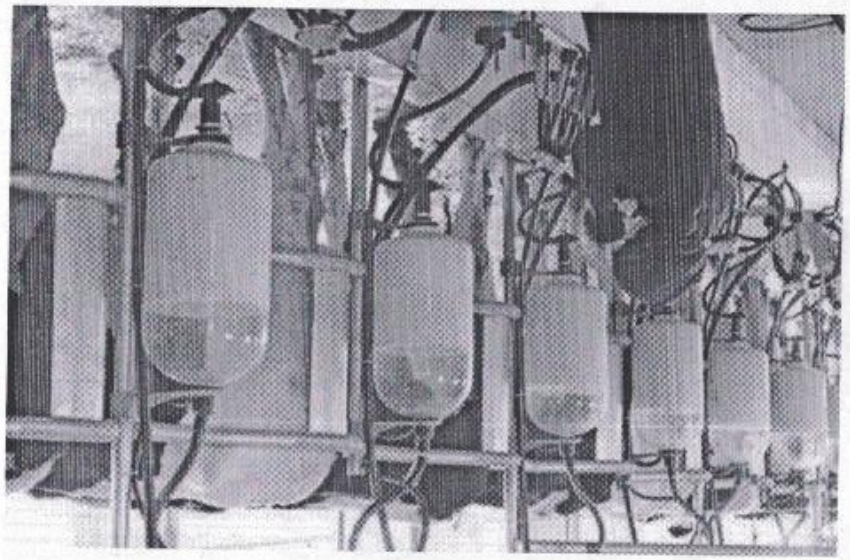

दुग्ध का संरक्षण

स्वास्थ्य उत्पन्न से स्त्रावित होने पर दुग्ध लगभग शून्य स्थिति में पहुँच जाता है। दुग्ध में प्राकृतिक इनहिबिटर्स जैसे, lactoferin और lactoperoxidase) दूध देने के बाद bacteria की संख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि को रोकते हैं परिवेश के तापमान पर। इस अवधि के भीतर 4 डिग्री सेल्सियस तक ठंडा करना दुग्ध की मूल गुणवत्ता को बनाए रखता है। और प्रसंस्करण और खपत के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले दुग्ध को सुनिश्चित करने के लिए पसंद का तरीका है! यांत्रिक प्रशीतक या शीतलन टैंक द्वारा शीतलक प्राप्त किया जा सकता है। हालांकि विकासशील देशों में छोटे पैमाने पर उत्पादकों के लिए शीतलक सुविधाएँ महंगी है और आमतौर पर केवल बड़े पैमाने पर डेयरी उद्यमों द्वारा खर्च किया जा सकता है! हालांकि छोटे पैमाने पर डेयरी संचालन की उच्च सांद्रता वाले क्षेत्रों में दुग्ध शीतलन केन्द्र छोटे पैमाने के उत्पादकों की सहकारी समितियों के लिए एक वैध समाधान का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं!

विकासशील देशों के कुछ हिस्सों में उच्च प्रारंभिक निवेश और चल रही लागत और तकनीकि समस्याओं के कारण प्रशीतक संभव नहीं है जिनमें बिजली आपूर्ति की कमी या अविश्वसनीयता शामिल है

दवोह दुग्ध संस्था में आने वाला भैंसों का दूध →
भैंस की नस्ल पर निर्भर करता है।

उपस्थित —

भैंसों की नस्ल →

दवोह मे प्रमुख नस्लों का दूध आता है।

जैसे →

मुर्रा – यह भैंस सबसे ज्यादा दुग्ध उत्पादन करने वाली भैंसो मे से है। इस भैंसों के सींग मुड़े हुए होते हैं, इस प्रजाति की भैंस अच्छा दूध देती है।

मेहसाणा – यह भैंस बहुत अच्छी दुग्ध उत्पादक है।

भदावरी – इस भैंस का शारीरिक आकार मध्यम रंग तांबिया तथा शरीर पर बाल कम होते है टांगे छोटी तथा मजबूत होती है घुटने से नीचे का हिस्सा हलके पीले सफेद रंग का होता है। सिर के अगले हिस्से पर आंखों के ऊपर वाला भाग सफेदी के लिए हुए होता है।

यह भैंस घी उत्पादन के लिए काफी अच्छी गुणवत्ता वाली भैंस है।

MEHSANA BUFFALO

मेहसाणा भैंस

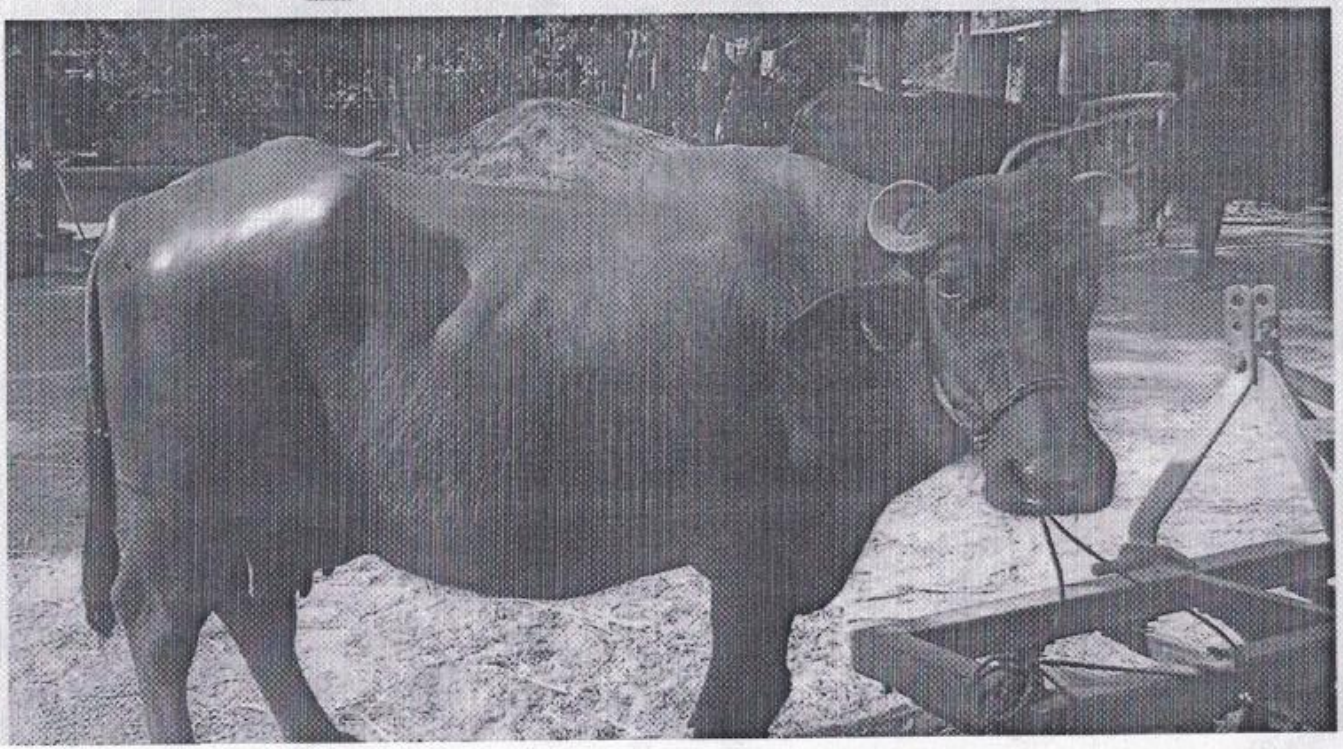

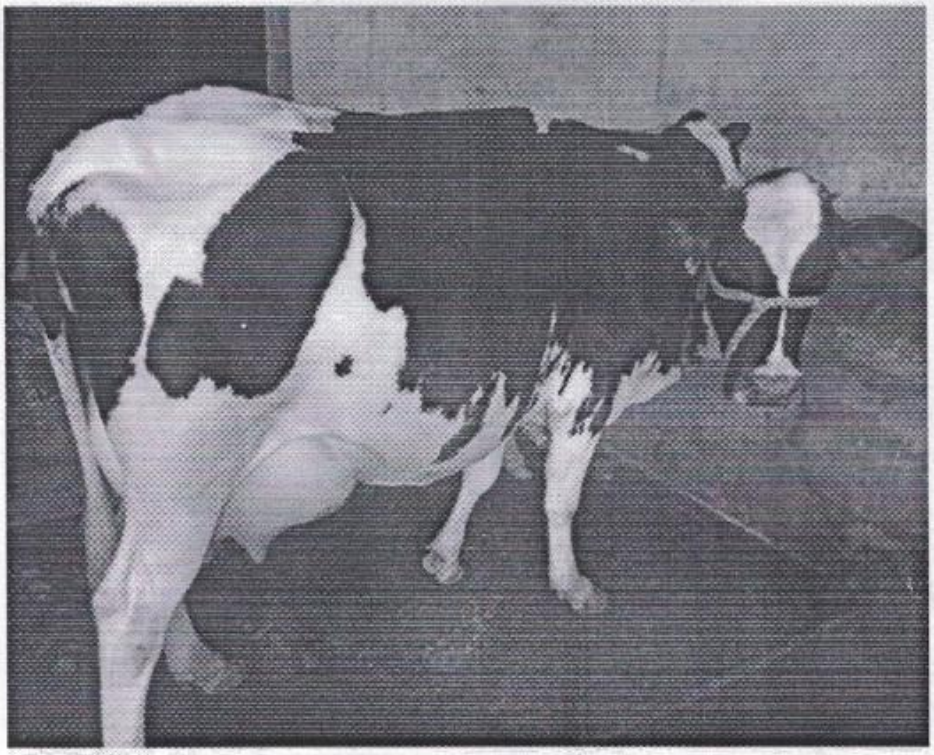

राइबोफ्लेविन →
यह एक प्रकार का विटामिन B है जो प्रतिरक्षा, लाल रक्त कोशिका के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करता है।

फास्फोरस – हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करता है।

विटामिन D → शरीर मे calcium के अवशोषण को बेहतर बनाने में मदद करता है।

पेंटोथेनिक एसिड –
भोजन को ऊर्जा में बदलने में मदद करता हैं।

पोटेशियम – द्रव संतुलन को नियंत्रित करता है और blood Pressure के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है।

विटामिन A → त्वचा को स्वस्थ रखने और आँखों की रोशनी को बढ़ाने में मदद करता है।

10 ②

①

Dairy Products की Nutritional Value -:

ज्यादातर लोगों का मानना है कि डेयरी उद्योग या दुग्ध उत्पादन Protein और Calcium के बड़े स्रोत हैं। इसके अलावा यह उत्पादन Vitamin और mineral के भी बड़े संयोजक होते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए इनकी बहुत ज्यादा आवश्यकता होती है। यू०एस० Food and drug Administration के दिशा निर्देशों के आधार पर दूध या किसी अन्य डेयरी उत्पाद के मात्र 28 gram मात्रा में नि०लि० पोषक तत्वों की मौजूदगी होती है।

प्रोटीन → मांसपेशियों के ऊतकों के निर्माण में मदद करता है। अधिकांश डेयरी उत्पादों में केसीन की मात्रा उच्च स्तर पर होती है। यह एक प्रकार का प्रोटीन है जो मांसपेशियों को मजबूत करता है। यह उन्हें आसानी से खंडित होने से भी बचाता है।

कैल्शियम → हड्डियों और दांतों को मजबूत बनाये रखने में मदद करता है।

Nili – Ravi Buffalo
(नीली-रावी भैंस)

RED SINDHI
SUBSCRIBE

गिर प्रजाति →

गिर गाय को सबसे ज्यादा दुधारू गाय माना जाता है। यह गाय एक दिन में 50 से 80 ली. तक दूध देती है। भारत के अलावा इस गाय की विदेशों में ज्यादा माँग है। ब्रजरायल और ब्राजील में भी मुख्य रूप से इन्हीं गायों को पाला जाता है।

लाल सिंधी प्रजाति →

लाल रंग की इस गाय को अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए जाना जाता है। लाल रंग होने के कारण इनका नाम लाल सिंधि गाय पड़ गया। यह गाय पहले सिर्फ सिंध इलाके में पायी जाती थी लेकिन अब यह गाय पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और ओडिशा में भी पायी जाती है। इनकी संख्या भारत में काफी कम है। साहीवाल गायों की तरह ही लाल सिंधि गाय भी लगभग 2000 से 3000 ली.

~~मुर्रा भैंस~~

मध्य प्रदेश में ज्यादा दूध देने वाली स्वस्थ और प्रसन्न गाय अब अपने मालिक को दो लाख रुपये तक का ईनाम भी दिला सकती है। गौ संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा देने के मकसद से राज्य का पशु कल्याण विभाग इस बावत एक प्रतिस्पर्धा आयोजित कर रहा है इसमें हिस्सा लिया जाता है।

भारतीय गौ वंश की नस्लें –:

साहीवाल → भारत की सर्वश्रेष्ठ प्रजाति है यह गाय मुख्य रूप से हरियाणा, उत्तरप्रदेश और म.प्र. में पायी जाती है। यह गाय सालाना 2000 से 3000 लीटर तक दूध देती है जिसकी वजह से ये दुग्ध व्यवसायी इन्हें काफी पसंद है। यह गाय एक बार माँ बनने पर करीब 10 महीने तक दूध देती है। अच्छी देखभाल करने पर यह कहीं भी रह सकती है।

कांकरेज प्रजाति →

यह गाय राजस्थान के दक्षिणी पश्चिमी भागों में पायी जाती है। जिनमें इस नस्ल की गाय प्रतिदिन 5 से 10 ली. तक दूध देती हो इस प्रजाति के गोवंश का मुंह छोटा और चौड़ा होता हो इस नस्ल की गाय प्रतिदिन 5 से 10 L. दूध देती हो अतः इसी कारण इस नस्ल के गोवंश को द्वि-परियोजनीय नस्ल कहा जाता है।

नीमाड़ी प्रजाति - यह मध्यप्रदेश में पायी जाने वाली गोवंश काफी फुर्तीले होते हैं। इनके मुंह की बनावट गिर जाति की जैसी होती हो गाय के शरीर का रंग लाल होता हो जिस पर जगह-2 सफेद धब्बे होते हैं। इस नस्ल की गाय दूध उत्पादन के मामले में अच्छी हो।

हल्लीकर प्रजाति (कर्नाटक)

हल्लीकर के गोवंश मैसूर (कर्नाटक) में सर्वाधिक पाये जाते हैं। इस नस्ल की गाय सबसे ज्यादा दूध देती हो

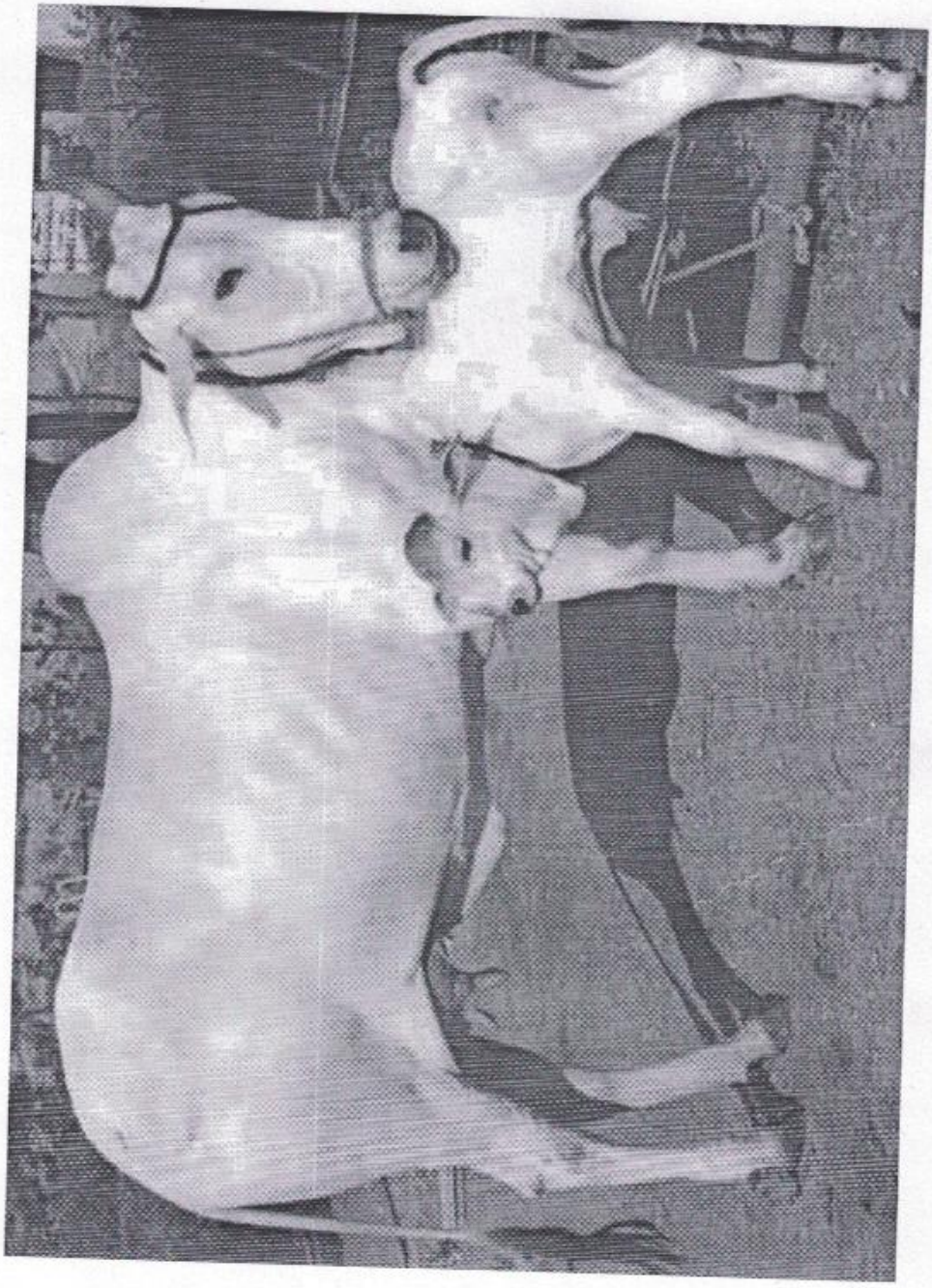

Gwalior Sahkari Dugdh Sangh Maryadit :-

उद्देश्य → ग्वालियर सहकारी दुग्ध संघ का उद्देश्य है कि दुधेरा क्षेत्र के ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों को सहकारी तर्ज पर तकनीकि जानकारी प्रदान करना और दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने और उत्पादन लागत को कम करने में उनकी सहायता करना उन्हें अपने घर पर दूध देने के लिए सर्वोत्तम दरों की पेशकश करना शहरी उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर अनाज और स्वच्छ दूध और दूध उत्पाद उपलब्ध कराना!

ग्वालियर सहकारी दुग्ध संघ मर्यादित, ग्वालियर

खोआ मावा - १

1. ताजा पूरे दूध से बनाया गया है।
2. वसा (D.B) 30.0
3. कैलोरी मान 413.0 K. प्रति gram.
4. शेल्फ जीवन में 5 दिन प्रशीतन के तहत
5. 500 gram BOX में उपलब्ध है।

छेना रबड़ी 1. सामग्री - ताजा दूध, छेना चीनी इलायची

2. वसा 11.6% चीनी 8.0%.
3. कैलोरी मान 209.0 K. कैल प्रति 100 gram
4. शेल्फ जीवन 3 दिन प्रशीतन के तहत
5. 100 gram cup में उपलब्ध है।

नारियल बर्फी :

1. इंग्रिडेंट्स - पिस्ता गार्निशिंग के साथ मिल्क सॉलिड्स कॉकोनट ड्राय इलायची और शुगर

2. वसा 35.0%. चीनी 12.0%.

3. कैलोरी मान 509.0K कैल प्रति 100 gram

4. शेल्फ जीवन 4 दिन प्रशीतन के तहत।

5. 250 gram और 500 gram बॉक्स में उपलब्ध है।

सादा दही :

1. पाश्‍च मे वसा ही टोंड दूध
2. सामाग्री टोन्ड दूध, दूध के ठोस वसा और सक्रिय लैक्टिक कल्चर

3. वसा 3.00%. कैलोरी मान 60.0K. कैल प्रति 100 gram.

4. शेल्फ जीवन 10 दिनों के तहत प्रशीतन

5. 100 gram, 200 gram कप और 400 gram पाउच में उपलब्ध है।

दुग्ध संघ के (हमारे उत्पाद) →

DTM

अतीत से बनाया गया है! दूध

1. फैट 1.5% और SNF 9.0%.
2. कैलोरी मान 48.0K कैल प्रति 100 gram.
3. जोड़ा गया vitamin A और D2
3. Shelf जीवन 2 दिन प्रशीतन के तहत
4. 500 ml. पाउच में उपलब्ध है।

चाय स्पेशल →

1. पास्तकृत दूध
2. फैट 3.0% और SNF 9.0%.
3. कैलोरी मान 60.0 K. कैल प्रति 100 gram
4. जोड़ा गया विटामिन A और D2
5. शेल्फ जीवन 2 दिन प्रशीतन के तहत
6. एक लीटर पाउच में उपलब्ध है।

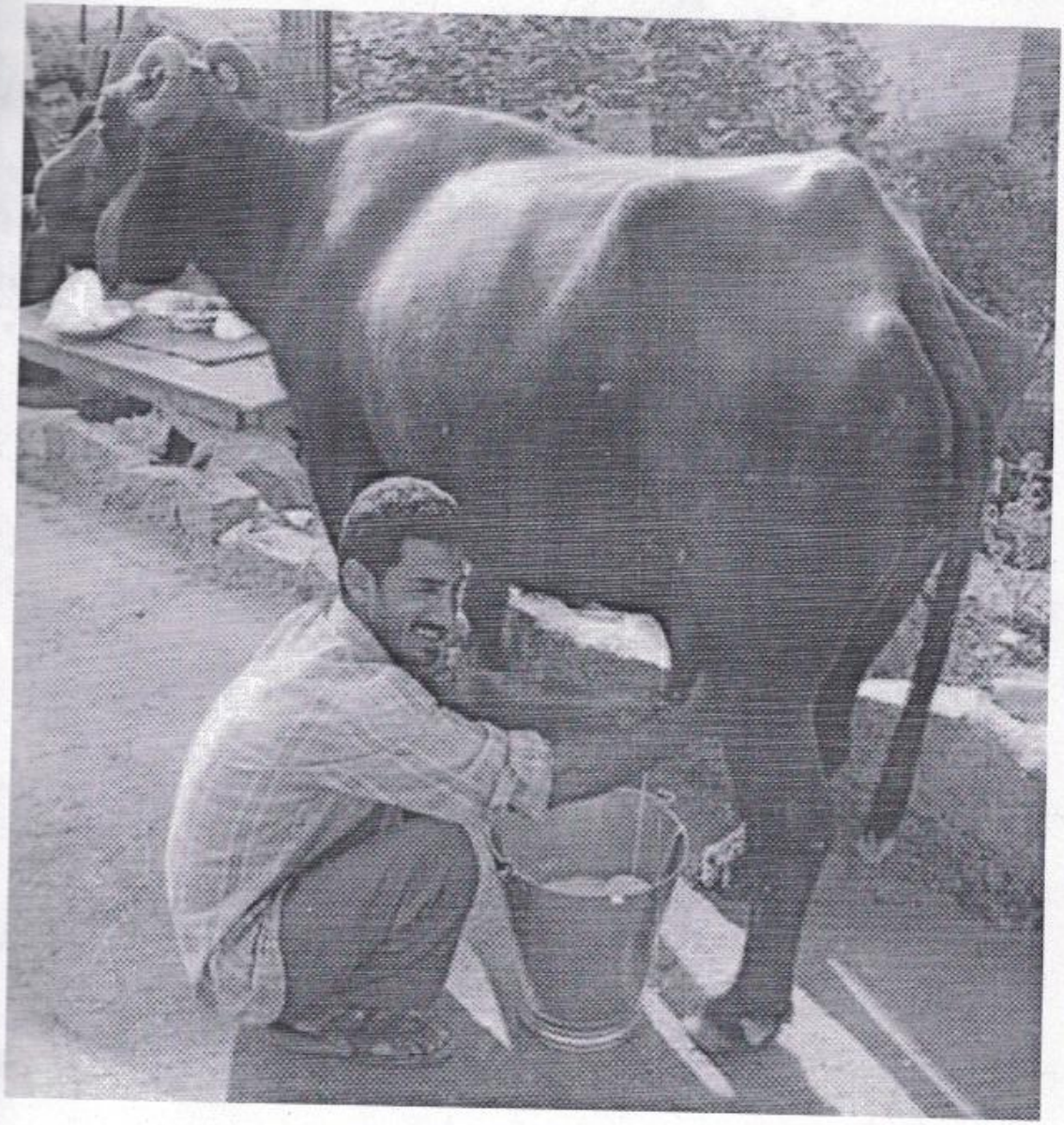

History-1

मवेशियों को 12,000 साल पहले एक खाद्य स्रोत के रूप में और बोझ के जानवरों के रूप में पालतू बनाया गया था डेयरी उत्पादन के लिये पालतू गायों से उपयोग करने से पहले सबूत प्रारंभिक नवपाषाण युग उत्तरपूर्वी अनातोलिया में है। बाद की शताब्दियों में डेयरी खेती दुनिया में कहीं और विकसित हुई पूर्वी यूरोप में छठी सहस्राब्दी ईसा पूर्व अफ्रीका में पांचवी सहस्राब्दी ईसा पूर्व और ब्रिटेन और उत्तरी यूरोप में चौथी सहस्राब्दी।

पिछली सदी में या अकेले डेयरी में विशेषता वाले बड़े फार्म सामने आये बड़े पैमाने पर डेयरी फार्मिंग केवल लगभग है।

डेयरी उत्पादन दूध के वाणिज्यिक उत्पादन के लिये होने का एक वर्ग है। जो डेयरी उत्पादन की अंतिम बिक्री के लिये संबंधित है।

Common Type →

हालांकि कोई भी स्तन धारी दूध का उत्पादन कर सकता है। वाणिज्यिक डेयरी फार्म आमतौर पर एक प्रजाति के उद्यम है। विकसित देशों में डेयरी फार्म आमतौर पर उच्च उत्पादक डेयरी गायों से युक्त होते हैं। वाणिज्यिक डेयरी farming में इस्तेमाल होने वाली अन्य प्रजातियों में बकरी, भेड़, ऊँट शामिल है। इटली में गधा डेयरी बढ़ती लोकप्रियता वाले मानव शिशुओं के लिए एक वैकल्पिक दूध स्रोत का निर्माण करने में सक्षम है।

Herringbone and parallel parlors :-

हेरिंगबोन और समानांतर पार्लर में दूध देने वाला आमतौर पर एक बार में एक पंक्ति में दूध देता है। दूध देने वाले को Holding यार्ड से गायों की एक पंक्ति दो दूध देने वाले पार्लर में ले जाया जाएगा और उस पंक्ति में प्रत्येक गाय को दूध दिया जाएगा एक बार दूध देने वाली मशीन से सभी milking मशीनों को हटा दिया जाएगा। तो दूध देने वाली गायों को उनकी क्रीड में छोड़ देती है।

गायों का एक नया समूह अब खाली जगह में लोड किया गया है। और जब तक सभी गायों को दूध नहीं दिया जाता है। तब तक कि यह प्रक्रिया दोहराई जाती है।

दूध देने वाले पार्लर के आकार के आधार पर जो सामान्य रूप से अलग है। गायों की दो पंक्तियों एक बार में पार्लर

दुध देने वाले पार्लर → मिल्किंग पार्लर को प्रति ऑपरेटर गायों की संख्या को अधिकतम करने के लिये दुध देने मे नवाचार पर जोर दिया गया है। जिससे गायों को दुध देने की अनुमती मिलाने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया गया है। जैसे कि एक विधानसभा लाइन पर और कम करने के लिये किसानों को गायों को दुध पिलाने से थोडा ऊपर एक मंच पर रखकर किसान पर शारीरिक तनाव होता है। जिससे गायों को लगातार झुकना पडता है। कई पुराने पर छोटे खेतों में अभी भी टाई-स्टाल या स्टैंचियन बार्न है। लेकिन दुनिया भर मे अधिकांश व्यावसायिक खेतों में पार्लर है।

दूध देने वाली पाइप लाइन →

२०वी सदी के अंत में शुरू की गई दूध की पाइप लाइन में automatic दूध देने का अगला नवाचार था एक स्थाई दूध रिट- पाइप लाइन में और एक इसरे vacuum पाइप का उपयोग करता है। जो गायों की पंक्तियों के ऊपर खलिहान या दूध देने वाले parlour को घेरता है। जिसमें प्रत्येक गाय के ऊपर त्वरित सील प्रवेश पाई होते है। दूध के कैटेनर की आवश्यकता को समाप्त करके दूध देने वाला उपकरण आकार और वजन में उस बिंदु तक सिकुड जाता है। जहाँ वह गाय के नीचे लटक सकता है। गाय के उबटन पर दूध देने वाले निपल्स के खुलने वाले वल द्वारा ही आयोजित किया जाता है, वैक्यूम System द्वारा दूध को दूध वापसी पाइप में खींच लिया जाता है

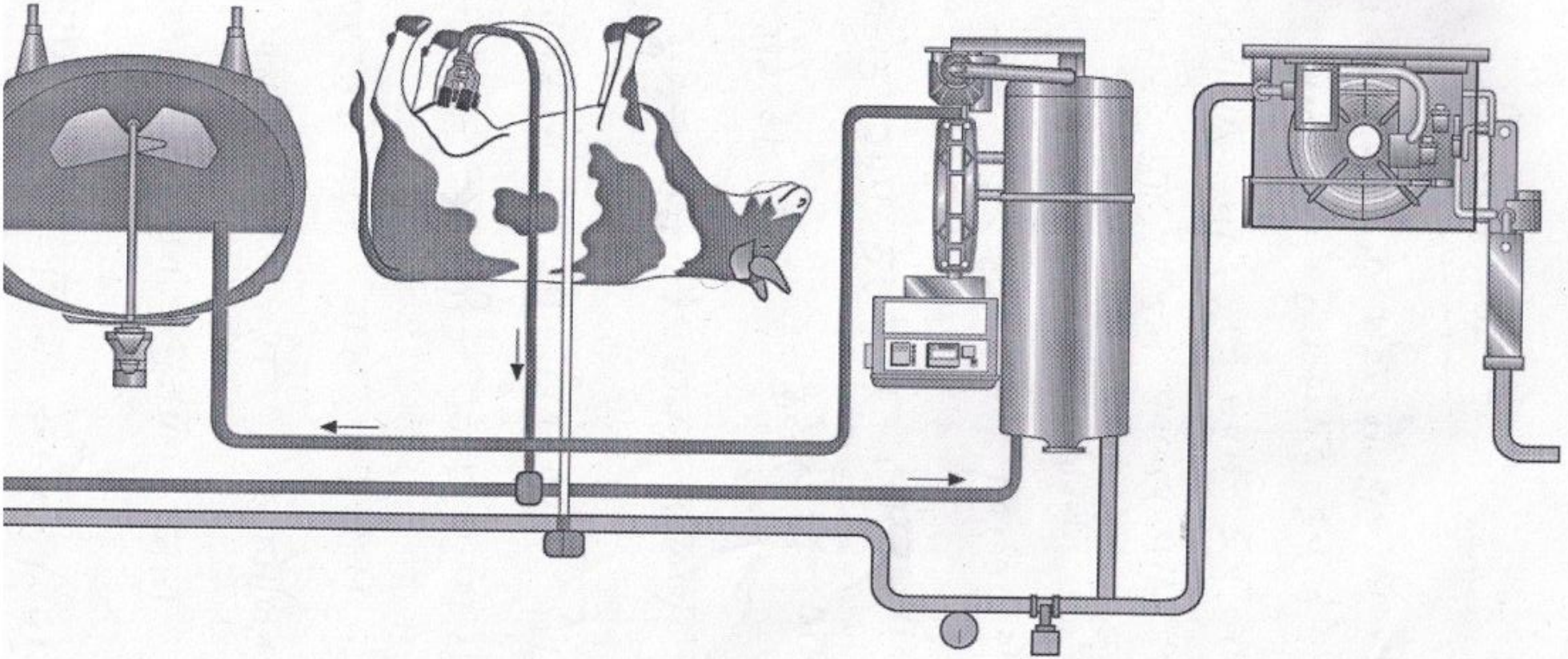

Vacuum bucket milking →

पहले दूध दुही देने वाली मशीनें पारंपरिक दूध देने वाली जेल का विस्तार थी।

शुरुआती milk डिवाइस एक नियमित दूध के पात्र के ऊपर फिट होता है। और गाय के नीचे फर्श पर बैठ जाता है। प्रत्येक गाय को दूध पिलाने के बाद बाल्टी को एक Holding Tanc में डाल दिया जाएगा यह सर्ज हैंगिंग मिल्क में विकसित हुआ याय को दूध पिलाने से पहले गाय के निचले हिस्से के आर पार एक बड़ी चौड़ी चमड़ी की पट्टी जिसे सरसिंग कहा जाता है। गाय के चारों ओर डाल दिया जाता है। दूध देने वाले उपकरण और संग्रह टैंक को पट्टा से गाय के नीचे लटका दिया गया है। इस नवाचार ने गाय को फर्श पर एक बाल्टी के ऊपर पूरी तरह से खड़े होने के बजाय दूध की प्रक्रिया के दौरान

साथ दुहना → केन्द्रीकृत डेयरी जैसा कि हम समझते हैं कि यह मुख्य रूप से गाँवो और शहरों के आसपास विकसित हुई हो जहाँ निवासियों को चरागाह भूमि की कमी के कारण अपनी खुद की गायों के लिये असमर्थ थे। कस्बे के पास, किसान, अतिरिक्त पशुओं के होने और कस्बे में दूध बेचकर कुछ अतिरिक्त पैसा कमा सकते थे। डेयरी किसान सुबह दूध के साथ बैरल भरेंगे और इसे एक वैगन पर बाजार में लायेंगे 19वीं सदी के अंत तक गाय का दूध देने का काम हाथ से होता था

डेयरी खेती हजारों वर्षों से कृषि का हिस्सा रही है। ऐतिहासिक रूप से यह छोटे, विविध खेतों का एक हिस्सा है।

"Automatic milker take-off"

यह एक जानवर के लिये हानिकारक हो सकता है क्योंकि उस दूध को उस बिंदु पर over milk किया जाता है। जहाँ order से दूध छोड़ना बंद कर दिया है। दूध देने की प्रक्रिया में सिर्फ दूध देने वाले को ही शामिल नहीं किया गया बल्कि यह निर्धारित करने की प्रक्रिया की निगरानी भी की जाती है। कि जानवर ने दूध निकाला है या नहीं

और दूध निकालने वाले को हटा देना चाहिए जबकि पार्लर संचालन ने एक किसान को कई जानवरों को बहुत जल्दी दूध देने की अनुमति दी। इससे किसान द्वारा एक साथ निगरानी करने के लिये जानवरों की संख्या भी बढ़ गई गाय से दूध निकालने के लिये स्वचालित टेक ऑफ प्रणाली विकसित की गई थी।

"Animal waste from large cattle dairies"

जैसा कि Phosphorus में मापा जाता है 5000 गायों का अपशिष्ट उत्पादन लगभग 70,000 लोगों की एक नगरपालिका के बराबर होता है! अमेरिका में 1,000 से अधिक गायों को साथ डेयरी संचालन एक सीएएफओ की EAP परिभाषा को पूरा करता है और EPA नियमों के अधीन है। उदाहरण के लिये कैलिफोर्निया के सेन जोकिन घाटी में बहुत सारे डेयरियों की स्थापना बहुत बड़े पैमाने पर की गई है! प्रत्येक डेयरी में एक ही उद्यम के रूप में संचालित कई आधुनिक दूध देने वाले पार्लर सेट अप होते हैं। प्रत्येक दूध देने वाला पार्लर 1,500 या 2,000 मवेशियों के आवास के उपर 4 लोगों वाले खलियान से घिरा हुआ है।

(4) ॥

use of Hormons →

पुनः संयोजक BST या RBST के रूप में जाना जाने वाला विकास Hormons के साथ गायों को पुरक करके उच्च दुग्ध उत्पादन को बनाये रखना संभव है।

लेकिन यह पशु और संभवतः मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों के कारण विवादास्पद है।

यूरोपीय संघ, जापान ऑस्ट्रेलिया, Newzisland और Canada ने इन चिंताओं के कारण इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है।

अमेरिका में हालांकि इस तरह का कोई प्रतिरोध मौजूद नहीं है। लेकिन डेयरी फार्मों पर RBST का उपयोग नहीं किया जाता। अधिकांश डेयरी प्रोसेसर यदि सभी नहीं हैं। तो RBST के साथ दूध स्वीकार नहीं करेंगे।

SGS

"Reproductive management" डेयरी फार्म पर पैदा होने वाली मादा बछड़ों को आमतौर पर पुराने गायों की जगह लेने के लिये प्रतिस्थापन स्टॉक के रूप में उठाया जाता है जो अब पर्याप्त रूप से उत्पादक नहीं है।

डेयरी गाय का जीवन गर्भावस्था और स्तनपान का एक चक्र है जो युवावस्था में शुरू होता है। जाहिर है कि डेयरी की उत्पादन क्षमता के लिये इन घटनाओं का समय बहुत म० पू० है। एक गाय दूध का उत्पादन नहीं करेगी जब तक कि उसने एक बछड़े को जन्म नहीं दिया है। नतीजतन दूध उत्पादन के स्तर को बनाये रखने के लिये पहले प्रजनन के साथ-2 सभी बाद के प्रजनन का समय म० पू० है।

स्तनपान प्रबंधन "Lactation management"

बछड़े के जन्म के साथ गाय स्तनपान शुरु कर देती है। गाय को दूध पिलाने या स्तनपान सामान्य रूप से जारी रहेगा! लेकिन उत्पादन में गिरावट आ जायेगी! डेयरी किसान दूध उत्पादन के पैटर्न से बेहद परिचित है! और दूध उत्पादन को अधिकतम करने के लिये गाय की प्रणाली ब्रीडिंग का ध्यान रखती है! दुग्ध निकालना और गर्भावस्था के पैटर्न को दुग्ध निकालने चक्र के रूप में जाना जाता है।

20 दिनों के बाद के विभाजन के लिये गाय को एक ताजा गाय कहा जाता है। इस चरण के दौरान दूध का उत्पादन जल्दी बढ़ता है! लेकिन दूध की संरचना भी बाकी चक्र से काफी भिन्न होती है

"Nutritinal managment"

अपने मवेशियों के लिये चारा डेयरी उत्पादन के लिये अब तक के सबसे बड़े खर्चों में से एक है।

चाहे वह उन भूमि द्वारा प्रदान किया जाये जहाँ वह फसलें उगाते हैं या खरीदी जाती हैं।

चारागाह आधारित डेयरी उत्पादक अपने चरागाह को बनाये रखने के लिये बहुत समय और मेहनत का निवेश करते हैं। इस तरह अपने मवेशियों के लिये भोजन करते हैं।

डेयरी उत्पादन के लिये चूंकि चराई जैसे चराई प्रबंधन तकनीकें आम हैं अपने मवेशियों को भोजन पहुँचाने वाली कई बड़ी डेयरियों में एक समर्पित पोषण विशेषज्ञ होता है। जो पशु स्वास्थ्य दूध उत्पादन और लागत दक्षता को ध्यान में रखते हुये आहार तैयार करने के लिये जिम्मेदार होता है।

इस मिल्कर में चार धातु के कप होते हैं।
एक प्रति च्यूची प्रत्येक रबर या सिलिकॉन के
साथ पंक्तिबद्ध, क्लस्टर एक दूध संग्रह
प्रणाली और एक स्पंदित निर्वात प्रणाली
दोनों से जुड़ा हुआ है। जब vacuum
चालू होता है। तो यह बाहरी धातु के कप
और लाइनर के बीच से हवा खींचता है।
और दूध को बाहर निकालता है।
जब vacuum बंद हो जाता है।
तो यह टीट को दूध के साथ फिर से
भरने का अवसर देता है। अधिकांश
दूध देने वाली प्रणालियों में एक दूध
देने वाले तकनीशियन को प्रत्येक गाय को
क्लस्टर संलग्न करना चाहिए। लेकिन
मशीन तब रुकती है जब गाय पूरी
तरह से दूह चुकी होती है और स्वतः
कप ... ...

Milking System →

डेयरी फार्म पर जीवन दूध देने वाले पार्लर के आसपास घूमता है। प्रत्येक स्तनपान कराने वाली गाय दूध देने के लिये दिन में कम से कम दो बार पार्लर जायेगी एक अविश्वसनीय मात्रा में Inginiaring दूध देने वाले parlor और दूध देने वाली मशीनों की डिजाइनिंग में चली गई? बताता म. पु. है। एक गाय को दुहते समय बचाये गए हर दूसरे को पूरे झुंड में घंटों तक जोड़ा जाता है।

दूध देने की मशीनें → Milking अब लगभग अनन्य रूप से मशीन द्वारा किया जाता है। हालांकि तकनीशियन अभी भी अधिकांश सुविधाओं पर आवश्यक है। सबसे आम दूध देने वाली मशीन को कलस्टर मिल्क कहा जाता है।

"Milking opration"

मिल्किंग मशीनों को स्वचालित रूप से एक वैक्यूम system द्वारा आयोजित किया जाता है। जो vacume के 15 से 21 pond /² inch (100 से 140 kp तक परिवेश वायु दबाव को खींचता है। vacume का उपयोग दूध के छोटे व्यास होसेस के माध्यम से लंबवत उठाने के लिये किया जाता है।

एक दूध लिफ्ट पंप बड़े व्यास स्टेनलेस स्टील पाइपिंग के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। प्लेट कूलर के माध्यम से एक रेफ्रिजरेटर बल्क टैंक में दूध खींचता है।

निकाले गये दूध टैंक में प्रवेश करने से पहले एक प्लेट और प्लेट हीट exchanger से गुजरता है। जहाँ इसे 40° F (4°C) पर कुछ दिनों के लिये सुरक्षित रूप से संग्रहीत किया जा सकता है।

पूर्व अवस्थित समय पर एक इस इस से

Refrigeration →

जब प्रशीतन पहले उपकरण को शुरू में
दूध के डिब्बों को ठंडा करने के लिये इस्तेमाल
किया जाता था जिसे हाथ से दूध देने से भरा
जाता था ये डिब्बे गर्मी को दूर करने और
उन्हें तब तक ठंडा रखने के लिये एक
ठंडे पानी के स्नान में रखे गए थे
जब तक कि उन्हें सुविधाओं को इकट्ठा
करने के लिये ले जाया नहीं जाता था।
चूंकि दूध रखने के लिये अधिक
स्वचालित तरीके विकसित किये गये हैं।
और परिणामस्वरूप दूध को बल्क - मिल्क
कूलर से बदल दिया गया था। आइस
बैंक पहले प्रकार के बल्क मिल्क कूलर थे
यह एक Double दीवार वोल्ट था जिसमें
वाष्पीकरणीय कॉइल और पानी टैंक के
नीचे और किनारों पर दीवारों के बीच
स्थित था।

History of milk preservation methods :-

ठंडा तापमान मुख्य विध है। जिसके द्वारा दूध की ताजगी को बढ़ाया गया है। जब पवन चक्कियों और अच्छी तरह से पंपों का आविष्कार किया गया था तो खेत पर उनके पहले उपयोग में से एक जानवरों को स्वच्छ पानी देने के अलावा दूध को ठंडा करने के लिये था।

अपने भंडारण जीवन का विस्तार करने के लिये जब तक कि इसे शहर के बाजार तक नहीं पहुँचाया जाता।

स्वाभाविक रूप से ठंडे भूमिगत पानी को लगातार एक ठंडा टब या वात में पंप किया जायेगा।

लंबे समय तक ताजे प्राप्त दूध से भरे दाल दस गैलन धातु के कंटेनर जो स्वाभाविक रूप से गर्म होते हैं। इस शीतलन स्थान में रखे गये हैं।

दूध ठंडा करने की यह विधि बिजली और प्रशीतन के आने से पहले लोकप्रिय थी।

Fully Automated Robotic milking -:

1980 से 1990 के दशक में रोबोट बनाने की प्रक्रिया विकसित की गई और शुरू की गई इनमें से हजारों प्रणालियाँ अब नियमित परिचालन में है। इन प्रणालियों में गाय को दिन के दौरान स्वतंत्र रूप से दूध देने का समय चुनने के लिये स्वायत्तता का एक उच्च स्तर है। ये प्रणालियाँ आमतौर पर गहन रूप से प्रबंधित प्रणालियों तक सीमित नहीं होती हालांकि मवेशियों के चरने की आवश्यकताओं के लिये और पशु स्वास्थ्य और प्रजनन क्षमता का पता लगाने के लिये सेंसर विकसित करने के लिये शोध कार्य जारी है, जब कोई गाय दूध देने वाली इकाई में प्रवेश करती है तो उसे केन्द्रित किया जाता है और उनके

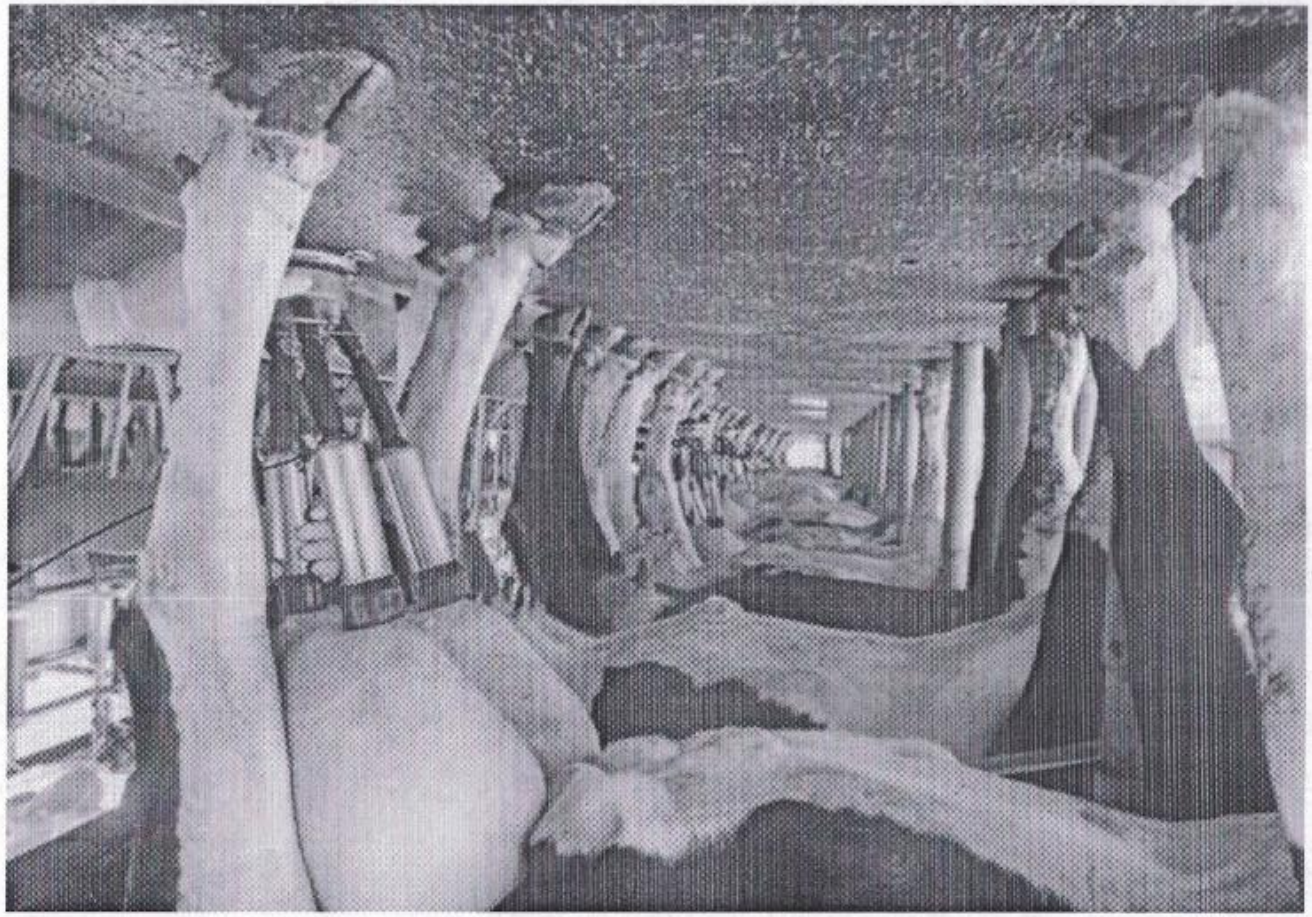

Mating and pregnancy :-

संयुक्त राज्य में कृत्रिम गर्भाधान डेयरी सुविधाओं पर उपयोग किया जाने वाला बहुत ही म. मु. प्रजनन उपकरण है। AI वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शुक्राणु को जानबूझकर डेयरी प्रबंधकों या पशु चिकित्सकों द्वारा गाय के गर्भाशय में पहुंचाया जाता है। स्टड फार्म पर बैल दान करते हैं। लेकिन इस पद्धति का उपयोग करते समय गाय और बैल के बीच कोई भी शारीरिक संपर्क नहीं होता है।

गर्भाधान की इस पद्धति ने कई कारणों से डेयरी उत्पादकों के बीच तेजी से लोकप्रियता हासिल की।

डेयरी बैल औसत डेयरी सुविधा पर रखने के लिये उपयुक्त है। एआई डेयरी झुंड के आनुवांशिक सुधार को गति देना संभव बनाता है।

इसका दूध
करता है
सारे रोग
समाप्त

Estrous cycle →

यौवन एस्ट्रस चक्र की शुरुआत के साथ मेल खाता है। अनुमानित चक्र आवर्ती Harmons और शारीरिक परिवर्तन हैं जो अधिकांश स्तनधारी महिलाओं के शरीर के भीतर हो जो ovulation और भ्रूण के Development के लिये एक उपयुक्त वातावरण का विकास करते हैं, गाय को पॉली एस्ट्रस माना जाता है। जिसका अर्थ है कि वह मृत्यु तक नियमित एस्ट्रस चक्र से गुजरती है। जब तक कि गर्भावस्था बाधित ना हो।

गायों में एक पूरा एस्ट्रस चक्र 21 दिनों तक रहता है। सबसे अधिक डेयरी उत्पादकों ने शुरुआत में एस्ट्रस चक्र पर चर्चा की जब गाय प्रजनन के लिये ग्रहणशील होती है केवल एक दिन के वर्ष में चलने वाले इस छोटे चरण को एस्ट्रस या गोलचाल के रूप में भी जाना जाता है।

SURTI BUFFALO

सुरती भैंस

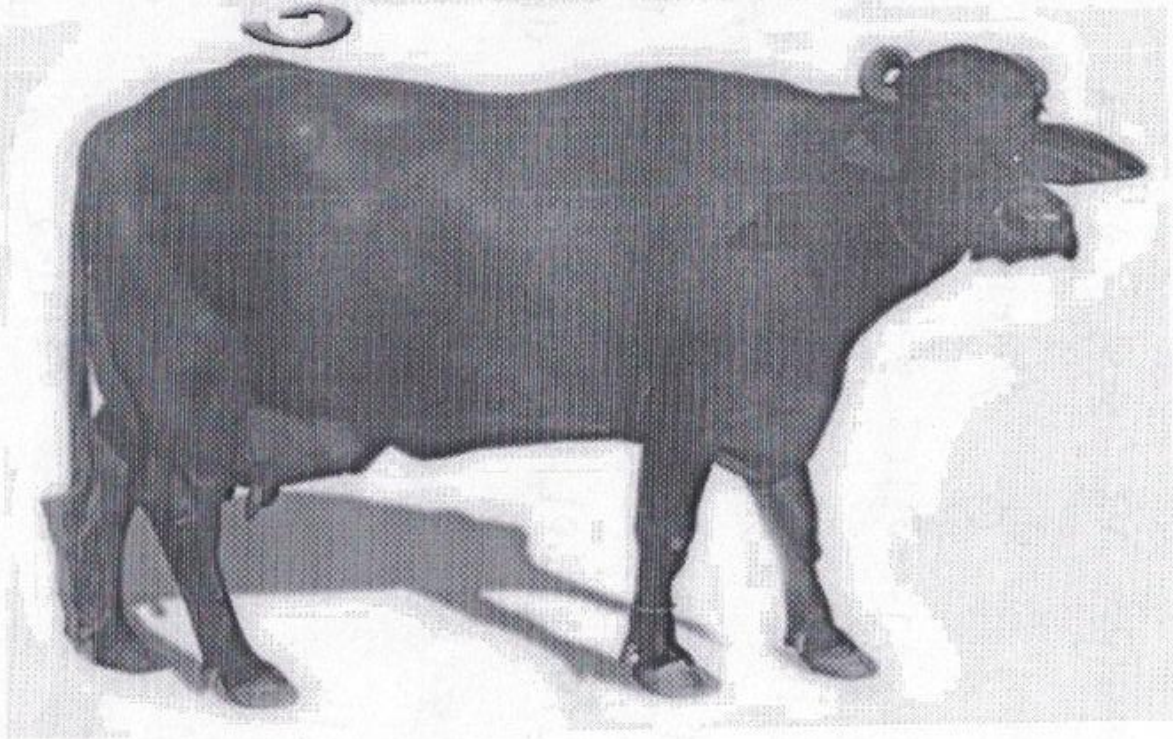

"Supply managment"

कनाडाई डेयरी उद्योगों के क्षेत्र में से एक है। जो आपूर्ति प्रबंधन प्रणाली के तहत है एक राष्ट्रीय कृषि नीति ढांचा है जो कि कमी और अधिशेष रोकने के लिये तैयार किये गये। उत्पादन और आयात नियंत्रण और मूल्य निर्धारण तंत्र के माध्यम से आपूर्ति और मांग का समन्वय करता है। ताकि किसानों को उचित दर पर वापिस मिल सके। और इन संवेदनशील उत्पादों की उच्च गुणवत्ता स्थिर और सुरक्षित रहे। इस मामले में किसानों को उनके द्वारा खरीदे गये कोटे की मात्रा के सम या कम होना चाहिये। कनाडा के प्रत्येक प्रांत की बाजार में मांग के आधार पर कोटा पर अपनी डेयरी के प्रति माह कुल कोटा के रूप में जाना

[illegible]

"World milk production"

क्र	देश	उत्पादन (1000 टन/वर्ष)	वैश्विक उत्पादन में हिस्सेदारी
1	भारत	97,760	11.81%
2	संयुक्त राज्य अमेरिका	44,293	5.35%
3	पाकिस्तान	34,869	4.21%
4	चीन	33,742	4.8%
5	ब्राजील	32,695	3.95%
6	जर्मनी	32,177	3.77%
7	रूस	31,177	3.05%
8	फ्रांस	25,260	2.58%
9	न्यूजीलैंड	21,372	2.50%
10	तुर्की	20,700	1.84%
11	यूनाइटेड किंगडम	15,256	1.76%
12	नीदरलैंड्स	14,544	1.66%
13	पोलैंड	13,702	1.45%
14	इटली	12,027	1.45%
15	मेक्सिको	11,988	1.27%
16	यूक्रेन	10,520	1.23%

"Market"

दुनिया भर में डेयरी उत्पादन के पैटर्न में बहुत भिन्नता है। कई देश जो बड़े उत्पादक हैं ज्यादातर इसका आंतरिक रूप से उपभोग करते हैं जबकि अन्य अपने उत्पादन का बड़ा प्रतिशत निर्यात करते हैं आंतरिक खपत अक्सर तरल दूध के रूप में होती है।

गायों का दूध निकालना पारंपरिक रूप से एक श्रम गहन operation था और अभी भी कम विकसित देशों में है। छोटे खेतों को कई लोगों को दूध देने और केवल और केवल कुछ दर्जन गायों की देखभाल करने की आवश्यकता होती है हालांकि कई खेतों के लिये ये कर्मचारी परंपरागत रूप से, परिवार के खेत को जन्म देते हुये परिवार के बच्चे हैं।

इजराइल (इज़राइल)

साथ पर डेयरी फार्म अब प्रति वर्ष सिर 13,785 L. की औसत से साथ उत्पादकता के लिये 2011 में इजराइल के नेतृत्व स्वार्ति नामक एक डेयरी गाय 18208 L। लीटर दूध देने वाली विश्व रिकॉर्ड धारक थी इजराइल डेयरी फार्मों ने प्रति वर्ष 11 Registered Cattle.

प्रति सिर का औसत उत्पादन प्राप्त किया जबकि राष्ट्रीय औसत प्रति सिर 10336 L अमेरिका प्रति गोवंश था।

इजराइल की खपत प्रति व्यक्ति 180 L. औसत के साथ अन्य पश्चिमी देशों की तुलना कम है।

"बैंक सहायता के लिये प्रस्ताव का गठन"

स्थानीय तकनीकी व्यक्तियों से परामर्श करने के बाद एक लाभार्थी द्वारा एक योजना तैयार की जा सकती है। राज्य पशुपालन विभाग। DRDA डेयरी सहकारी समिति। संघ। फेडरेशन वाणिज्यिक डेयरी किसान।

यदि संभव हो तो लाभार्थियों को प्रगतिशील डेयरी फार्म और सरकार। सेना। भी जाना चाहिये। कृषि विश्वविद्यालय डेयरी आसपास के क्षेत्र में खेती करता है और डेयरी खेती की लाभप्रदता पर चर्चा करता है एक डेयरी फार्म में अच्छा व्यवहार कर्ता प्रशिक्षण और अनुभव अत्यंत वांछनीय होगा। डेयरी सहकारी समितियाँ यदि गाँव में विद्यमान हैं तो सभी सहायक सुविधाएँ प्रदान करेंगी विशेष रूप से तरल दूध के विपणन के लिये।

बहुत बड़ी योजनाओं के साथ डेयरी योजनाओं के लिये विस्तृत परियोजना रिपोर्ट देनी होगी।

वित्त की वस्तुओं में पूंजीगत संपत्ति शामिल होगी। जैसे दुधारू पशुओं की खरीद शेड का निर्माण उपकरणों की खरीद आदि की प्रारंभिक अवधि के दौरान खिला लागत एक/दो महीने का पूंजीकरण किया जाता है, इसे टर्म लोन किया जाता है भूमि विकास, बाड़ लगाने की लागत अच्छी तरह से खुदाई डीजल इंजन / पम्पसेट का कमीशन बिजली कनेक्शन आवश्यक नौकरों के क्वार्टर गोदाम परिवहन वाहन दुग्ध प्रसंस्करण सुविधाओं आदि के लिये विचार किया जा सकता है।

ग्रहण भूमि की लागत को ग्रहण के लिये नहीं माना जाता है।

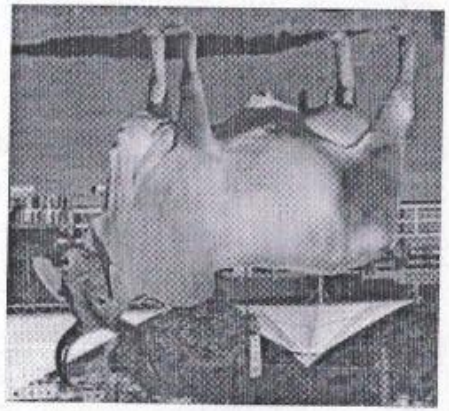

Scope for Dairy Farming and its National importance

वर्ष 2008-09 में देश में कुल दुग्ध उत्पादन 108.5 million अनुमानित था मीट्रिक टन

और मांग 2020 तक 180 million टन होने की उम्मीद है। इसे प्राप्त करने के लिये दुग्ध उत्पादन में वार्षिक वृद्धि दर को वर्तमान 2.5% से बढ़ाकर 5% किया जाना चाहिये।

इस प्रकार दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये एक जबरदस्त गुंजाइश संभावना है लाभदायक डेयरी फार्मिंग।

डेयरी शुरु करने के लिये नाबार्ड से पुनर्वित्त सुविधा वाले बैंकों से ऋण उपलब्ध है।

बैंक ऋण प्राप्त करने के लिये किसानों को एक वाणिज्यिक बैंक की निकटतम शाखा में आवेदन करना चाहिये क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक या सहकारी बैंक अपने क्षेत्र में निर्धारित आवेदन पत्र भी है। वित्तपोषण बैंकों की ... भी उपलब्ध है।

(7) "Animal Husbandry"

Intoduction →

डेयरी छोटे सीमांत किसानों और कृषि के लिये सहायक आय का एक म. मू. स्त्रोत है मजदूर पशुओं से प्राप्त खाद मिट्टी में सुधार के लिये कार्बनिक पदार्थों का एक अच्छा स्त्रोत प्रदान करता है! उर्वरता और फसल की पैदावार! गोबर से प्राप्त गोबर गैस का उपयोग घरेलू उद्देश्यों के लिये ईंधन के रूप में किया जाये से पानी खींचने के लिये इंजन चलाने के लिये भी अधिशेष चारा और कृषि द्वारा उत्पादों को पशुओं को खिलाने के लिये लाभकारी रूप से उपयोग किया जाता है!

डेयरी फार्मिंग के माध्यम से कई व्यक्तियों के लिये! इस प्रकार, डेयरी संपूर्ण रोजगार भी प्रदान करती है। डेयरी कार्यक्रमों के मुख्य लाभार्थी छोटे / सीमांत किसान और भूमिहीन

वर्तमान मिशन लक्ष्य और उद्देश्य, यदि मूल से भिन्न परिवर्तन को प्रभावित करने का कारण →

भविष्य के लक्ष्य और उद्देश्य →

1. PG और P.HD चलाने के लिये चार विषयों में कार्यक्रम।
2. पुस्तकालय का डिजिटलीकरण
3. डेयरी प्लांट का उन्नयन।

लघु और दीर्घकालिक योजनाएँ :-

शॉर्ट टर्म प्लान →

1. PG कार्यक्रमों की बहाली
2. बेरोजगार युवाओं, दुग्ध उत्पादकों, HSG और दुग्ध विक्रेताओं आदि के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों का कार्यान्वयन।

लंबी अवधि की योजनाऐं →

डेयरी और खाद्य उत्पादों के विश्लेषण के लिये एक रेफरल प्रयोगशाला स्थापित करना।

लक्ष्यों के उद्देश्य :

वीटेक के छात्रों को शिक्षण प्रदान करने के लिये भारत में Dairy उद्योग और शैक्षिक संस्थानों के प्रबंधन के लिये आवश्यक तकनीकि कर्मियों और कुशल श्रमिकों को प्रदान करने के लिये।

विभिन्न देशी और पश्चिमी दुग्ध और स्वाद्य उत्पादों पर शोध करने के लिये। यह उत्पाद प्रक्रिया विकास को आगे बढ़ाने के लिये इस कॉलेज की एक अभिन्न गतिविधि है। यह स्नातकोत्तर छात्रों को स्नातक और आगामी अनुसंधान और व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिये आवश्यक कॉलेज प्रयोगशाला सुविधाओं को मजबूत करने का इरादा रखता है।

विभिन्न विस्तार गतिविधियों का संचालन करने के लिये अर्थात प्रशिक्षण कार्यक्रम यह कार्य प्रदर्शनी संकाय प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्यूषन प्रदर्शनियों कृषि प्रदर्शन कम्पारेशन, सर्वेक्षण।

Dairy उद्योग कार्यक्रम →

डेयरी उद्योग की सेवा के लिये सर्वश्रेष्ठ डेयरी टेक्नोलॉजिस्ट के निर्माण के अंतिम लक्ष्य की ओर तीन दशकों के लिये अथक प्रयास करते हुये कॉलेज भवन में नवीनतम उपकरणों के साथ अच्छी तरह से सुसज्जित ऑडियो- विजुअल सक्षम कक्षाओं, computer लैब और अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं है। छात्रों के लिये सीखने की प्रक्रिया को और अधिक रोचक और विचारशील बनाना सभी कक्षायें सीसीटीवी निगरानी में है जो विश्वविद्यालय में अपनी तरह की पहली परीक्षा है। Dairy Enginiaring के लिये एक अलग कार्यशाला का उद्घाटन 24 June 2010 को किया गया था। ह्ड्स ऑन ट्रेनिंग एवं experimental Lerning के लिये अच्छी तरह से सुसज्जित उत्पाद तैयारी हॉल एक अतिरिक्त सुविधा है। जिसे हाल ही में सारे शस्त्रागार में जोड़ा गया है।

आर्थिक व्यवहार्यता -

इकाई लागत

चारा और पशु चिकित्सा सहायता पशुओं के प्रजनन बीमा, श्रम, और अन्य के लिये इनपुट लागत ओवर हेड्स।

स्वचालित लागत पानी दूध, खाद, बछड़े की थैलियाँ नर तथा मादा बछड़ों की बिक्री मूल्य अन्य आदि

स्वागत - व्यय विवरण और वार्षिक सकल अधिशेष

cash प्रवाह विश्लेषण

चुकौती अनुसूची।

अन्य दस्तावेजों जैसे ऋण आवेदन पत्र सुरक्षा पहलू मार्जिन मनी की आवश्यकतायें आदि की भी जाँच की जाती है।

तकनीकि क्षेत्र के संचालन के लिये योजना क्षेत्र का दौरा किया जाता है।

बैंको द्वारा योजनाओं का समुचित उपयोग :-

इस योजना को बैंक की निकटतम शाखा में प्रस्तुत किया जाना चाहिये बैंक अधिकारी योजना तैयार करने या निर्धारित आवेदन पत्र भरने में सहायता कर सकता है। बैंक तब अपनी तकनीकी व्यवहार्यता और आर्थिक व्यवहार्यता के लिये योजना की जांच करेगा।

तकनीकी व्यवहार्यता -

1) पशु चिकित्सा, प्रजनन और दुग्ध संग्रह केन्द्र और के लिये चयनित क्षेत्र की नजदीकी। वित्तपोषण बैंक की शाखा।

2) पास के पशुधन बाजार में अच्छी गुणवत्ता वाले पशुओं की उपलब्धता।

3. प्रशिक्षण सुविधाओं की उपलब्धता।

4. अच्छी चराई भूमि की उपलब्धता।

इस योजना में भूमि, पशुधन बाजार पानी की उपलब्धता की जानकारी शामिल होनी चाहिए।

चारा, चारा, पशु चिकित्सा सहायता, प्रजनन सुविधायें विपणन पहलू प्रशिक्षण सुविधायें अनुभव किसान और राज्य सरकार से उपलब्ध प्रकार डेयरी।

समाज / संघ / महासंघ।

इस योजना में जानवरों की संख्या और प्रकार के बारे में जानकारी शामिल होनी चाहिये।

उनकी नस्ल उत्पादन प्रदर्शन और लागत तथा अन्य प्रासंगिक इनपुट और आउटपुट उनके विवरण

के साथ लागत और ~~औ~~ अन्य प्रासंगिक इनपुट और आउटपुट उनके विवरण के साथ लागत इनके आधार पर परियोजना की कुल लागत लाभार्थी द्वारा प्रदान की जाने वाली मार्जिन मनी बैंक ऋण के

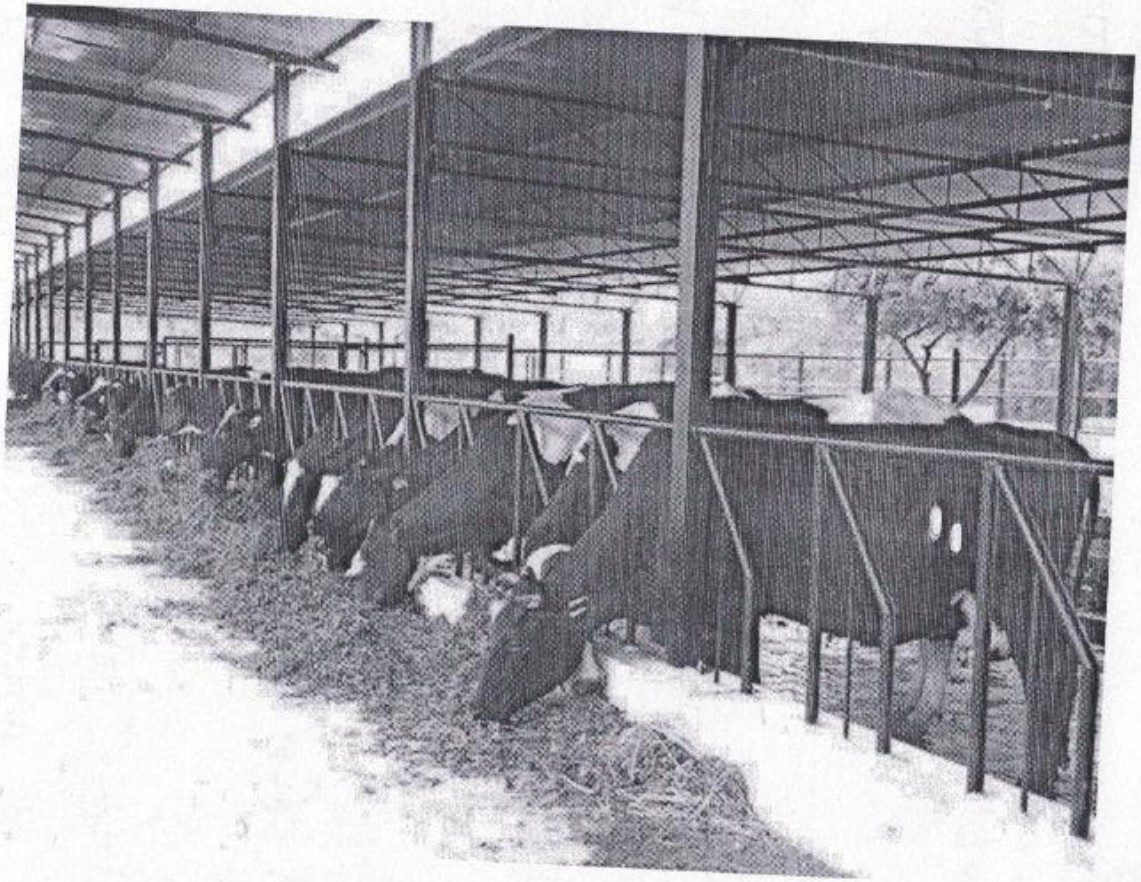

संगठन और शासन

प्राधिकरण →

विश्वविद्यालय स्तर पर डेयरी प्रौद्योगिकी कॉलेज डीन द्वारा संचालित होता है। जो संस्थानों के संबंधित प्रमुखों द्वारा किए गए शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार कार्यक्रमों में आवश्यक नेतृत्व प्रदान करेगा।

कॉलेज of Dairy Tacnology का नेतृत्व एसोसिएट डीन करता है। जो विश्वविद्यालय के साथ शिक्षण अनुसंधान और विस्तार में कॉलेज के काम के सहयोग करता है।

प्राधिकारियों और उनकी रचना, शक्तियाँ और जिम्मेदारियाँ-

प्राधिकरण और उनकी संरचना शक्ति और जिम्मेदारियाँ का पालन विश्वविद्यालय के नियमों दिशानिर्देशों और ICR मॉडल अधिनियम के अनुसार किया गया है।

आई सी आर मॉडल अधिनियम और दिशानिर्देशों को अपनाना —ः

विश्वविद्यालय ने सामान्य रूप से ICR मॉडल अधिनियम Modal और UG और PG दोनों de-gree कार्यक्रमों के लिये दिशानिर्देशों को अपनाया है।

एसोसिएट डीन की अध्यक्षता वाला कॉलेज के शैक्षणिक और प्रशासनिक मामलों के सुचारु कामकाज के लिये अकादमिक परिषद द्वारा गठित नियमों और विनियमों द्वारा संचालित होता है। Collage में पाँच विभाग है।

जैसे Dairy engeeniaring Dairy Tecnalogy Dairy Chemical Science Dairy microbiology और डेयरी अर्थशास्त्र और व्यवसाय प्रबंधन

Associate deen को Acadmic अनुसंधान विस्तार और प्रशासन के मामलों पर शिक्षण संकाय ...

संस्थागत योजना और निगरानी प्रक्रिया →

नियोजन प्रक्रिया विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों और अन्य घटकों द्वारा और साथ ही हितधारकों द्वारा की गई मांगों पर आधारित है

इन मांगों को समय सीमा के साथ अलग-अलग स्तरों पर एक कार्य योजना में बदल दिया जाएगा।

विश्वविद्यालय के लिये एक कार्य योजना विकसित करते समय विभिन्न विभागों छात्रों किसानों की आवश्यकता को ध्यान में रखा जाता है।

इस योजना में छोटी और लंबी अवधि की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है।

संकाय के प्रदर्शन की निगरानी विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा कुलपति की निगरानी में उनके अनुसंधान शिक्षण और विस्तार गतिविधियों के संदर्भ में की जाती है।

संगठनात्मक संरचना →

कॉलेज of Dairy Technology का नेतृत्व एसोसिएट डीन करता है। जो college द्वारा किये जाने वाले शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार कार्यक्रमों में आवश्यक नेतृत्व प्रदान करता है। शिक्षण संकाय प्रशासनिक कर्मचारियों द्वारा समर्थित है। कॉलेज की प्रशासनिक संरचना अंजीर 1 में दी गई है।

विश्वविद्यालय के कामकाज के विभिन्न पहलुओं पर निर्णय लेने की प्रक्रिया —:

विश्वविद्यालय के भीतर पदानुक्रमित निर्णय लेने की प्रक्रिया का पालन किया जा रहा है। पत्रोचार संस्थान के विभिन्न प्राधिकरणों और विश्वविद्यालय के विभिन्न घटकों को शामिल करते हुये संचार के एक चैनल को दर्शाता है।

पशु कल्याण -

एक कारखाने के खेत के वातावरण में डेयरी उत्पादन की प्रथा की पशु कल्याण कार्यकर्ताओं द्वारा आलोचकों की गई है। डेयरी उत्पादन के बारे में कुछ नैतिक शिकायतें का हवाला दिया गया है। कितनी बार डेयरी मवेशियों को गर्भवती रहना चाहिए अपनी माताओं से बछड़ों को अलग करना कैसे डेयरी मवेशी रखे जाते हैं और डेयरी उत्पादन के बारे में पर्यावरण संबंधी चिंतायें हैं, दूध के उत्पादन के लिये आवश्यक है कि कि गाय स्तनपान में हो जो गाय द्वारा बछड़े को जन्म देने का परिणाम है। गर्भधान गर्भावस्था और दूध निकालना का चक्र चालीस से पचास दिनों के लगभग दो महीनों की सूखी अवधि के बाद जो कि कदाचित चक्र को पुनः उत्पन्न करने की अनुमति देता है।

Puberty and first breeding →

अधिकांश डेयरी उत्पादकों ने अपने बछड़े को जन्म देने के लिये एक प्रतिस्थापन हेइफर का लक्ष्य रखा है। और इस तरह वह दूध देने वाले झुंडों में शामिल हो गया। अपने दूसरे जन्मदिन पर – चूंकि गाय का गर्भकाल 9 महीने से थोड़ा अधिक होता है। इसका मतलब है कि गाय का 15 महीने की उम्र तक गर्भधारण किया जाना चाहिए क्यों कि प्रजनन प्रक्रिया अक्षम है। ज्यादातर उत्पादकों का लक्ष्य हो कि वे 12 से 14 महीनों के बीच अपने हीफर्स का प्रजनन करें इससे पहले कि एक बछिया को नस्ल किया जा सके। उसे यौन परिपक्वता तक पहुंचना चाहिये। और बछड़े को सफलतापूर्वक सहन करने के लिये उचित शारीरिक स्थिति प्राप्त करना चाहिये।